1

पवित्र आत्मा का अध्ययन ज़्यों?

परमेश्वर के वचन से अध्ययन किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण और कठिन विषयों में से एक विषय पवित्र आत्मा का है। हम उसे दिखा नहीं सकते। हम में से अधिकतर लोगों के मन में मनुष्य के रूप में यीशु की कुछ न कुछ तस्वीर अवश्य होगी। इसी प्रकार, पिता के बारे में विचार करते हुए, मन में ऐसी ही कोई तस्वीर आ सकती है; पर आप पवित्र आत्मा को कैसे दिखा सकते हैं? पवित्र आत्मा को मन में दिखाने की हमारी अयोग्यता इस विषय के अध्ययन को हमारे लिए और भी कठिन बना देती है। तो फिर पवित्र आत्मा का अध्ययन क्यों?

पहले तो, पवित्र आत्मा के अध्ययन से हमें अपने आत्मिक स्वभाव को ही समझने में सहायता मिलेगी। बाइबल सिखाती है कि हमें परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया है (उत्पत्ति 1:26)। परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और हमें उसके स्वरूप पर बनाया गया है, इसलिए हम आत्मिक जीव हैं। आत्मिक जीवों के रूप में, अपने आत्मिक स्वभाव को हम अपने परमेश्वर के पवित्र आत्मा के बारे में कुछ समझ कर ही जान सकते हैं।

दूसरा, पवित्र आत्मा के अध्ययन से हमें परमेश्वर को ही जानने में सहायता मिलेगी। यूहन्ना 17:3 में यीशु ने कहा था "और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।" परमेश्वर को उसके पवित्र आत्मा में हमारी समझ के बढ़ने से ही जाना जा सकता है। पवित्र आत्मा का अध्ययन यीशु को जानने के लिए आवश्यक है, कि हमें उसके द्वारा अनन्त जीवन मिले।

तीसरा, पवित्र आत्मा का अध्ययन मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक है। रोमियों 8 में पौलुस ने परमेश्वर के लोगों के जीवनों में पवित्र आत्मा की भूमिका पर चर्चा की है। उसने ऐलान किया है कि आत्मा उन में वास करता है "जो यीशु मसीह में हैं," और हमें "मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र" करके "[हमारी] मरनहार देहों को जिलाता" है (आयतें 1, 2, 11)। आत्मा की उपस्थिति से हमें "देह की क्रियाओं को मारने" के योग्य बनाया जाता है (आयत 13) और हम परमेश्वर को "हे अब्बा, हे पिता" कह पाते हैं (आयतें 14-17)। प्रार्थना करते समय, पवित्र आत्मा याचक की तरह काम करता है और हमारे मनों को जांचकर पिता के सामने "ऐसी आहें भर-भर कर जो बयान से बाहर हैं, हमारे

लिए विनती करता है'' (आयत 26)। यीशु में विजयी जीवन जीने में सहायता करते हुए पवित्र आत्मा परमेश्वर की सन्तान के मनों में ये महत्वपूर्ण काम करता है।

चौथा, पवित्र आत्मा के अध्ययन से हमें शिक्षा सम्बन्धी गलती करने से बचने में सहायता मिलती है। अध्ययन करने से पवित्र आत्मा के बारे में पाई जाने वाली गलतफ़हमी और नासमझी तथा उलझन दूर हो जाती है। कुछ गंभीर, धार्मिक लोग किसी भी भावनात्मक अनुभव को पवित्र आत्मा के काम कहने लगते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि किसी के उद्धार पाने और परमेश्वर की सन्तान बनने से पहले उसके मन पर पवित्र आत्मा को रहस्यमय ढंग से काम करना आवश्यक है। पवित्र आत्मा के बारे में दूसरों का विचार है कि वह एक अव्यैक्तिक प्रभाव (जैसे बिजली) है, जिसमें कोई व्यक्तिगत गुण या विशेषता नहीं है। धार्मिक जगत में इतनी उलझन के साथ, आश्चर्य की बात नहीं है कि बहुत से मसीही लोग पवित्र आत्मा के विषय पर बात करने से बचते रहे हैं! अंग्रेज़ी के किंग जेम्स संस्करण में, परमेश्वरत्व के इस तीसरे सदस्य के अनुवाद ''Holy Ghost'' से कुछ बाइबल छात्रों की उलझन में और बढ़ोतरी हो सकती है।

सारांश

पवित्र आत्मा के विषय से दूर रहना हमारी उलझन का उत्तर नहीं है। किसी विषय पर परमेश्वर के वचन की बात को नज़रअन्दाज़ करने से हम पर शैतान के दुष्चक्र वाले आक्रमणों के लिए रास्ता साफ़ हो जाएगा। शैतान लोगों को हर प्रकार की झूठी शिक्षा, अन्धविश्वास और पापपूर्ण जीवन में डालने के लिए उनकी अज्ञानता पर ही निर्भर करता है।

शैतान के राज्य के अन्धकार से लड़ने के लिए, मसीही लोगों को परमेश्वर के वचन की रोशनी पर निर्भर रहना होगा (भजन संहिता 119:105)। वचन से लैस होकर, मसीही लोग भजन लिखने वाले के प्रार्थना पूर्ण व्यवहार से पवित्र आत्मा के विषय का अध्ययन कर सकते हैं: ''अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुआई करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुंचाएं!'' (भजन संहिता 43:3)। आइए हम उसके पवित्र आत्मा के बारे में समझने के लिए परमेश्वर के वचन की खोज इसी विनम्र व्यवहार से करते हुए अपना अध्ययन आरम्भ करें। परमेश्वर की सच्चाई की अनन्त रोशनी के साथ, हम गलत शिक्षाओं, अन्धविश्वासों तथा धार्मिक लोगों के अनुभवों पर सावधानीपूर्वक विचार करेंगे।